मैत्री, एकता, बन्धुत्व

# दिशा ДИША

पंजीकरण संख्या
PI No FC 77-73489,
EL-No FC 77-73487

वर्ष : 01 अंक 01

सितम्बर 2018 | मास्को, रूस | MOSCOW, RUSSIA | त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय दूतावास, मास्को के सौजन्य से

With support of Jawaharlal Nehru Cultural Centre, Embassy of India, Moscow

## महामहिम भारतीय राजदूत महोदय

# श्री डी बी वेंकटेश वर्मा जी

को रशियन फ़ेडरेशन के लिए नियुक्ति पर

## रूसी भारतीय मैत्री संघ ''दिशा''

के समस्त सदस्यों एवं प्रवासी भारतीयों की ओर से

कोटि-कोटि शुभ कामनाएँ।

-डॉ. रामेश्वर सिंह

**रूसी भारतीय मैत्री संघ "दिशा", मॉस्को, रूस**

**Russian- Indian Friendship Society "Disha", Moscow, Russia**

डॉ. रामेश्वर सिंह, अध्यक्ष एवं संस्थापक, रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा', मॉस्को, रूस ।

संपादक - त्रैमासिक पत्रिका 'दिशा', मॉस्को, रूस। संस्थापक : हिंदी मंडल दिशा, मॉस्को

+7 985 341 38 59, info@disha.su, www.disha.su | Facebook: DISHA (INDO-RUSSIAN friendship society), ВКонтакте: http://vk.com/nco_disha

## ।। स्वागत है आपका महामहिम जी ।।

रशियन फ़ेडरेशन के लिए भारतीय राजदूतावास में नवनियुक्त
भारतीय राजदूत महामहिम

# श्री डी बाला वेंकटेश वर्मा जी का

## कोरल मेड, रूसयूरो फार्मा, इंडियन फिल्मस एवं रूस टूरिज़्म

की ओर से मंगल कामनाएँ एवं स्वागत ज्ञापित करते हैं।

हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आपका कार्यकाल प्रवासी भारतीयो के लिए समस्त उपलब्धियाँ लेकर आए। भारत और रूस की मित्रता को चार चाँद लगे ।

## एक बार फिर आपका स्वागत करते है श्रीमान ।

पंजीकरण संख्या PI No FC 77-73489, EL-No FC 77-77487

## ।। संपादक मंडल ।।

रूसी भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' द्वारा
जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र,
भारतीय दूतावास, मॉस्को के सौजन्य
से प्रकाशित और प्रसारित

मुख्य सम्पादक और प्रकाशक :
**डॉ.रामेश्वर सिंह**

तकनीकी सम्पादक :
**नादेज़्दा सिंह**

संपादन सहयोगी :
**सुशील कुमार 'आज़ाद'**

रूसी में सहयोगी :
ल्युदमीला ख़ख़लोवा, इन्दिरा गज़िएवा, गुज़ेल स्त्रिल्कोवा, येकतिरीनापानिना,
अनस्तसीयागूरिया, अल्पनादास, नौशादबानो, रति कोसिनवा

भारत से सहयोगी :
प्रो एस.पी.गौतम, डॉ. योगेश दूबे, डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह, श्री आदित्य चौधरी,
डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय, डॉ. राकेश पाण्डेय, श्री सागर सूद, श्री अनिल कुमार 'भारती'

संचालन एवं सम्पादन पूर्णतया अव्यावसायिक व अवैतनिक है ।

कार्यालय : info@disha.su, www.disha.su
FB: DISHA (INDO-RUSSIAN friendship society)
VK: http://vk.com/nco_disha
सम्पर्क दूरभाष : +7 985 341 38 59

लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादक की सहमति ज़रूरी नहीं है।
रूसी–भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' पर हमें गर्व है।
**नि:शुल्क वितरण के लिए**

Отпечатано в ООО «ИДЕЯ»
**www.ideaonline.ru**

# अनुक्रमणिका


| विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|
| संपादकीय | डॉ रामेश्वर सिंह | 4 |
| रूसी–भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' : एक नजर | डॉ रामेश्वर सिंह | 5 |
| सार्थक सफर के मुहाने | कुमार विनायक | 7 |
| विश्व हिंदी संगोष्ठी : प्रतिवेदन | कुमार विनायक | 8 |
| त्रिभाषा तुलनात्मक ज्ञान विकास पद्धति : श्री अनिल भारती का रूस यात्रा संस्मरण | अनिल कुमार 'भारती' | 9 |
| सोचती हूँ (कविता) | निशा नेगी 'स्नेही' | 10 |
| ग़ज़ल | सुनीता लुल्ला | 10 |
| आस्था | सुशील कुमार आज़ाद | 11 |
| तिब्बत की सीमा पर–राहुल सांकृत्यायन | डॉ. सविता सिंह | 12 |
| ग़ज़ल | सागर सूद | 13 |
| विश्वाध्यात्म के विकास में तपोनिष्ठ वेदमूर्ति पं. श्रीराम आचार्य के साहित्य का योगदान | जगवीर सिंह कादयान | 14 |
| अंधेर नगरी:एक प्रासंगिक प्रहसन | डॉ. ऋचा शर्मा, | 15 |
| रामायण में आदिवासी की भूमिका | डॉ. चंदन कुमारी | 17 |
| कविता | सिन्द्धेश्वर कश्यप | 19 |
| कविता | श्रीमती भारत पिल्लै | 20 |
| छोटी हूँ पर बहुत बड़ी हूँ | रीया शर्मा | 20 |

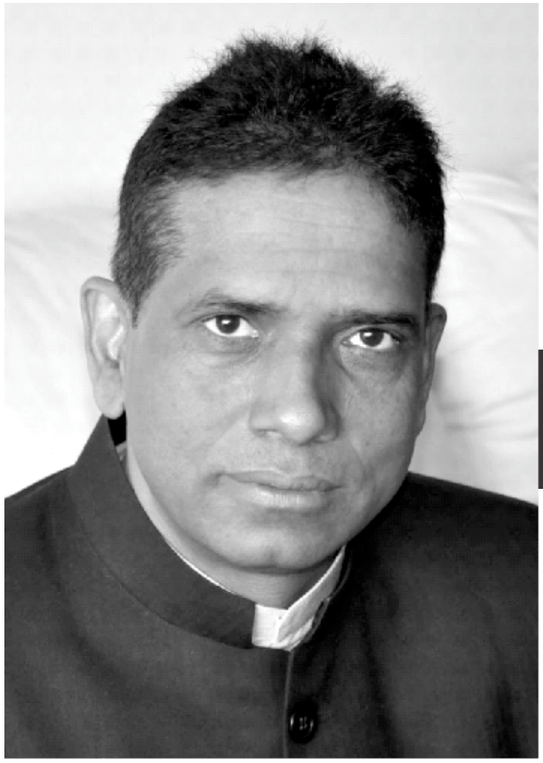

# संपादक की कलम से

## विश्व हिंदी सम्मेलनों से हिन्दी के विकास की अपार संभावनाएँ

किसी भी भाषा के विकास के लिए वर्तमान पीढ़ी को जी जान से प्रचार प्रसार का जिम्मा उठाना ही चाहिए। भाषा के बिना आज तक कोई भी साम्राज्य ज्यादा दिन तक नहीं टिक सका है। इतिहास गवाह है कि जब-जब किसी समाज या राष्ट्र ने अपनी भाषा का ह्रास होते देखा है, वो राष्ट्र और समाज भी विश्व के नक्शे से धीरे-धीरे लुप्त होता चला गया है। हिंदी भाषा भी अपने अस्तित्व की अहम लड़ाई के दौर से गुज़र रही है। आज विश्व भाषाओं के आँकडे हिन्दी के पक्ष में खड़े हैं लेकिन फिर भी हिंदी अपनी असली अस्मिता के लिए संघर्ष जारी रखे हुए है। आजादी के सत्तर वर्षों के बाद भी हिंदी को वास्तविक स्थान नहीं मिला, इसका कारण है जनमत के हृदय में हिंदी को मानसिक रूप से स्वीकार नहीं करना। हालांकि हिंदी सदा से ही राष्ट्र की जन चेतना का सशक्त साधन रही है। अंग्रेजों की शिक्षा नीति और अंग्रेजीयत का हमारे मानसिक आकाश पर आवेष्टित हो जाने का प्रभाव आज भी कहीं न कहीं है। इस दिशा में हिंदी प्रेमियों के द्वारा इस मानसिक संक्रमण के काल से निकालने के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार की राजभाषा नीति भी इस दिशा में अपार संभावनाओं को तलाशती हुई कार्यक्रमों को संचालित कर रही है। हिंदी, भारतीय समाज के जन समर्थन की भाषा रही है इसलिए यह बिना सरकारी सहयोग के भी निरंतर अग्रसर रही है। हिंदी अपनी समस्त सहयोगी भाषाओं के साथ आगे बढ़ने की क्षमता रखती है। इसी क्षमता को शिरोमणि मानकर हिंदी के विकास के लिए विश्व हिन्दी सम्मेलनों, गोष्ठियों, चर्चाओं, सभाओं का आयोजन किया जाना अति सराहनीय है। इससे हिंदी को विश्व स्तरीय पहचान मिल रही है। विश्व में हिंदीभाषियों की संख्या में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी होना इन सम्मेलनों की सफलताओं के आयामों को खोजना ही है। अभी हाल ही में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 15 अगस्त से 20 अगस्त को मॉरीशस में सम्पन्न हुआ, जहाँ भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पोषक तत्वों की तलाश हुई। साथ में कद्दावर हिन्दी विद्वानों ने हिन्दी के भविष्य पर चिंतन मंथन और निष्कर्ष निकालने का भागीरथ प्रयास किया। इस सम्मेलन में मैंने स्वयं अपनी पत्नी श्रीमती नादेज्दा के साथ मौजूद रह कर हिंदी के इस इस महा सागर के मंथन से निकलने वाले रत्नों का अवलोकन करने का प्रयास किया। इस सम्मेलन में साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था मुम्बई एवं हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस के सहयोग से अनेक विद्वानों ने भी भाग लिया।

**डॉ. रामेश्वर सिंह**

# रुसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' एक नजर में

**लेखक : डॉ. रामेश्वर सिंह**
**अध्यक्ष एवं संस्थापक**
**रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा', मॉस्को, रूस ।**
**संपादक - त्रैमासिक पत्रिका 'दिशा', मॉस्को, रूस।**
**संस्थापक : हिंदी मंडल दिशा, मॉस्को**
**+7 985 341 38 59, info@disha.su, www.disha.su**
**Facebook: DISHA(INDO-RUSSIAN friendship society),**
**ВКонтакте: http://vk.com/nco_disha**

साहित्य से समाज की नब्ज को पहचानना, अतीत और वर्तमान दोनों के बीच एकात्मकता का भाव केवल और केवल साहित्य की पगडंडी से ही जोड़ा जा सकता है। साहित्य की अविरल धारा हमें वर्तमान से अतीत और कभी-कभी भविष्य का भी वरण करने का आभास देती है। प्रवास में रहते हुए अनेक भारतीय लोगों ने अपने वतन से दूर अपनी माटी की महक को वास्तविकता या कल्पना में महसूस जरूर किया होगा। इस अहसास की गर्मी में हम सबको कुछ न कुछ छूटा हुआ सा लगता रहा है, जिसे केवल एक वर्ग विशेष में नहीं रखा जा सकता, क्योंकि अहसास के अनेक चरणों से मानव मन गुजरता ही रहता है। इस दंश की पीड़ा में साहित्य ही मरहम हो सकता है, जिसके सान्निध्य में हम सब अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत का मखमली अनुभव पा सकते हैं। मैंने अपने जीवन काल के उन दिनों में जब मैं अपने देश भारत की सरजमीं की ऐसी ही रोमांचकारी यादों के झूलों में झूल रहा था उस समय मेरी भेंट पद्मश्री डॉ मदन लाल 'मधु' जी से हुई। यह मिलनी मेरे जीवन का एक बहुत बड़ा सपना सिद्ध हुई । उस समय डॉ. मधु साहब मॉस्को की एक कदावर संस्था 'हिंदुस्तानी समाज' के अध्यक्ष हुआ करते थे। उन्होंने मेरी भावात्मक शक्ति के साथ-साथ सामाजिक सरोकार की प्रतिभा को पहचाना और अपने साथ मिला लिया, यही सफर मेरी आस्था, शौक और समाजसेवा का पर्याय बन गया। मैं इस संस्था में लगभग पंद्रह साल उपाध्यक्ष के पद पर रहा और लगभग चार साल सलाहकार के रूप में समाज-हित में कार्य करने का मुझे मौका मिला। लेकिन मैं कुछ और ही तरह की संस्था का सपना बुन चुका था, जिससे आगे चलकर डॉ. साहब के मार्गदर्शन व आशीर्वाद से ही रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' का सन् 2010 में जन्म हुआ। तब से आज तक इस संस्था ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपने मील के पत्थरों को आज भी मैं शिद्दत से स्मरण करता हूँ। इस संस्था के माध्यम से जहाँ रूसी-भारतीय समाज के लोग, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और कभी कभी राजनैतिक समानताओं को भी महसूस करने का सौभाग्य महसूस करते चले गए। कुल मिलाकर रूस और भारत की मैत्री की प्रतिछाया में ही मुझे इस संस्था के अस्तित्व का असली आधार नजर आने लगा था। इस एकता को स्थापित करने के लिए साहित्य के माध्यम से ही इन्हें अमरत्व प्रदान करने का प्रयास किया गया जो आगे चलकर 'दिशा' के रूप में रूसी और भारतीय समाज की अग्रणी पत्रिका बनी। इस त्रैमासिक पत्रिका के अस्तित्व में आने से जहाँ किसी भी भारतीय को अपनी सभ्यता संस्कृति के साक्षात दर्शन हो सकते

हैं वहीं रूस और भारत के मित्रतापूर्ण संबंधों की महक को भी अनुभव किया जा सकता है। यह कितना सही है कि जीवन का रहस्य कोई नहीं जान पाया मुझे शाब्दिक अर्थ तो न जाने कितनी बार सुनने को मिला, लेकिन रूस की सरजमीं पर इसके साक्षात दर्शन मुझे हुए। भारत की माटी की ख़ुश्बू से दूर एक रुहानी संगत का असर जिसमें हिंदुस्तान धड़कता है। यह है वो एक संस्था, जो अपने आप में एक समाज है –भारतीय समाज। जिसके सम्पर्क से मुझे एक पल के लिए भी महसूस नहीं हुआ कि मैं किसी अन्य देश की धरती पर हूँ। यह थी मेरे जीवन की चाह जिसमें वतन का पूरा अक्श उभरता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य से समाज और समाज से साहित्य पोषित होता आया है। इसी उक्ति के आधार पर मुझे रूसी–भारतीय मैत्री संघ यानि 'दिशा' के संबंध में आपसे अपनी बात सांझा करनी है। अगर साहित्य की बात की जाए तो साहित्य वास्तव में समाज ,राष्ट्र और विश्व को अपने आँचल में ऐसे छुपा लेता है जैसे एक माँ अपने शिशु को। यह 'छिपाना' ही वास्तव में अमरत्व की ओर एक कदम है। मैंने रूसी– भारतीय समाज की संचेतना को प्रगाढ़ और मुखुर करने के लिए साहित्य के रामबाण का ही सहारा लिया जिसे आप सभी ने मुक्त कंठ से 'दिशा' नामक संज्ञा से विभूषित किया। सन 2010 के शरदकाल की वो ऐतिहासिक बेला जब रूसी और भारतीय समाज के मनीषियों ने एक मंच पर एकत्र होकर अपने वर्षों पूर्व मित्रतापूर्ण सम्बन्धों को नई इबारत में लिखने का उपक्रम किया। इस संघ के अस्तित्व में आने से वे सभी उद्देश्य स्वत: ही पूर्णता की ओर अग्रसर होते चले गए, जिन्हें भारतीय जनमानस रूस के संदर्भ में महसूस करता था और रूसी नागरिक अपने मनोभावों के अनुरूप भारतीय सभ्यता और संस्कृति का सान्निध्य चाहते थे। अर्थ स्पष्ट है कि इस संघ का उद्देश्य दोनों राष्ट्रों के नागरिकों के बीच, वैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, दार्शनिक, व्यापारिक और नैतिक सांझेदारी को विश्व पटल पर स्थापित करना ही था।

इस संघ के वजूद में आने के उद्देश्य जिसमें साहित्यिक गतिविधियों, गोष्ठियों, मेलों, सम्मेलनों, चर्चाओं, महोत्सवों, खेल प्रतियोगिताओं, फिल्म महोत्सवों, वाद–विवाद आदि के आयोजन के साथ साथ एक त्रैमासिक पत्रिका 'नई–दिशा' को भी प्रकाशित करता है। यह संघ रूसी–भारतीयों की मैत्री प्रगाढता को प्रकट करता है, क्योंकि इसके अंतर्गत संघ भारतीय और रूसी समाज के सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों के साथ मिलकर अनेक कार्यक्रमों को संचालित करता है।

गत अनेक वर्षों से यह संगठन 'दिशा' रूस में प्रतिवर्ष 'नववर्ष महोत्सव' और 'भारत महोत्सव (इंडिया फिस्ट) का अयोजन करता है जिसे दोनों देशों के लोग हर्षोल्लास से मनाते हैं। इस समारोह में भारतीय और रूसी परिवारों के लोग, खासतौर पर जो दोनों देशों की सांझी विरासत के रूप में उदय हुए परिवार हैं, इसमें बहुत मन से भाग लेते हैं। इस संगठन का वातावरण इतना आकर्षक है कि यह रूस में 'मिनी भारत' का अहसास देने में पूर्णत: सफल रहा है। आपके हरमन प्रिय इस संगठन के माध्यम से रूस स्थित परिवारों के बच्चे, बूढ़े और जवानों को भारतीयता की पहचान कराना भी महती उद्देश्यों में शामिल है।

***इस दिशा में सहयोगी के तौर पर जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र , भारतीय राजदूतावास, मॉस्को की भूमिका अति महत्वपूर्ण रहती है। इस आभार के भार से उऋण नहीं हुआ जा सकेगा। इस संस्थान से मिलकर आपकी 'दिशा' ने एक लघु प्रयास किया है जिसके अंतर्गत 'हिंदी मित्र सम्मान' कार्यक्रम शुरू किया। यह सम्मान प्रतिवर्ष एक ऐसे रूसी नागरिक को प्रदान किया जाता है जो किसी भी स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार में संलग्न रहा हो। गत वर्ष का 'हिंदी मित्र सम्मान–2015' मॉस्को विश्व विद्यालय की हिंदी की आचार्य श्रीमती ( डॉ ) ल्युदमीला खखलोवा को एवं 'हिंदी मित्र सम्मान–2016' येकतिरीना पानिना को एक भव्य समारोह में लाखों करतल ध्वनियों के बीच समर्पित किया गया। 'दिशा' ने एक और नया प्रोजेक्ट लिया जिसमें महापुरुषों की महानता को नई पीढी तक अनवरत पहुंचाया जाए इसके लिए भारत में रूसी राजदूत श्री अलेक्जांद्र कदाकिन जी के नाम पर 'हिंदी मित्र सम्मान' और पद्म श्री मदनलाल 'मधु' के नाम से 'हिंदी सेवा सम्मान' प्रतिवर्ष दिए जाने का प्रण लिया जिसे साल 2017–18 में हिंदी दिवस के मौके पर मानविकी विश्वविद्यालय की हिंदी प्राध्यापिका श्रीमती इंदिरा गजेबिया को हिंदी मित्र सम्मान एव कजान विश्वविद्यालय के हिंदी अनुवादक दामित्री बोब्कोब को हिंदी सेवा सम्मान से नावाजा गया। इस प्रकार के सेवी सम्मानों के लिए चयन भी एक चुनौती से कम नहीं है। इसके लिए एक कमेटी का गठन किया जाता है जिसमें हिंदी के उच्च कोटि के विद्वानों, चिंतकों या साहित्यकारों को लिया जाता है। योग्य व प्रवीण व्यक्तित्व का चयन करते समय उसकी हिंदी सेवाओं, जीवन उपलब्धियों, कर्म के प्रति समर्पण, समाज में कद और शिक्षा जैसी बेहतरीन बारिकियों की कसौटी पर परखा जाता है।***

अध्यापन एवं सेवाभावी लोगों के साथ साथ हिंदी के विद्यार्थियों को भी प्रोत्साहित करने का हमारा उद्देश्य स्वत: उजागर हुआ है। इस संदर्भ में 'दिशा' ने हिंदी के विकास हेतु कई प्रतियोगिताओं को समय-समय पर संचालित व आयोजित करने का निर्णय लिया है। इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए गतवर्ष हिंदी भाषण एवं हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विजेता छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया। इसी परंपरा में गत वर्ष 19 मार्च 2016 को मॉस्को विश्वविद्यालय के अफ्रीकी एवं एशियन अध्ययन संस्थान में रूसी छात्रों के बीच ***'हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता'*** का आयोजन हुआ जिसमें मॉस्को विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले राजकीय महाविद्यालयों के लगभग 33 छात्रों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में पाँच छात्राओं को सम्मानित किया गया जो मॉस्को विश्वविद्यालय की थी। यह आयोजन अपने आप में एक रोमांच का रूप लिए हुए था। 27 मई 2016 का एक कार्यक्रम मुझे प्रत्यक्ष रूप में याद है जब भारत-रूस हिन्दी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठि का आयोजन किया था जिसमें भारत से आए 21 कदावर हिंदी विद्वानों के साथ ***'भूमंडलीकरण में भारत और रूस का सांस्कृतिक योगदान'*** विषय के साथ-साथ हिंदी की वर्तमान और भविष्य की अपार संभावनाओं के धरातल की खोज पर सार्थक चर्चा की गई। इसी दिशा में हमने 26-27 अक्तूबर 2016 को ***'तृतीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन, मॉस्को'*** के भी भव्य आयोजन में सहयोगी के रूप में भाग लिया जिसमें हिंदी की वर्तमान स्थिति पर गंभीरता से विचार किया गया। हिंदी के विकास के विविध आयामों व संभावनाओं को तलाशा गया। इसी वर्ष 'दिशा' ने मुम्बई की एक संस्था साहित्यिकी सांस्कृतिक शोध संस्थान के साथ मिलकर 11-12 मई 2018 को कजान फेडरल युनिवर्सिटी में हिंदी सम्मेलन के आयोजन का दायित्व उठाया जिसका विषय ***'विश्व भाषा साहित्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी'*** पर देश विदेश के प्रकाण्ड पंड़ितों के बीच हिंदी सम्मेलन करवाया। इसी विषय को लेकर 13-17 मई के बीच मॉस्को एवं सेंटपीटार्सवर्ग के विश्वविद्यालयों में गोल मेज कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया ताकि वहाँ के हिंदी प्रेमियों और सेवियों को हिंदी के वर्तमान और भविष्य के प्रति चिंतन करने का सुअवसर प्रदान किया जा सके।

यह भी निर्णय लिया गया कि 'दिशा' नामक त्रैमासिक पत्रिका का भी प्रकाशन प्रारंभ करें जो रूसी और भारतीय-रूसी संयुक्त परिवारों को कानूनी सहायता भी उपलब्ध कराएगा। हम सबको उम्मीद है कि यह हमारा प्रयास अपने समस्त उद्देश्यों में सफल होगा। इस पत्रिका का आत्मविश्वास बढ़ाते हुए अनेक विद्वान साथियों ने अपना मत अभिव्यक्त किया है। जिनमें *रूसी विद्वान एवं प्रोफेसर श्रीमती खखलोवा जी के शब्दों में* ***'दिशा हिन्दी की ही नहीं बल्कि रूस और भारत की संस्कृति का एक पुल है जिस पर हम चलकर एक किनारे से दूसरे किनारे तक का सफर कर सकते हैं। इसकी सांस्कृतिक विरासत वास्तव में हम सबका सौभाग्य है।*** ***श्रीमती इंदिरा गजेविया ने*** *इस पत्रिका के कई अंक पढ़ने के बाद कहा कि* ***'प्रवास में इस पत्रिका का कोई सानी नहीं है। इसमें साहित्य और समाज का जो जुड़ाव दिखाई देता है वह बेजोड़ है।*** ***'डॉ. हरपाल ग्रोवर 'रतिया' ने*** *इस पत्रिका की सराहना करते हुए कहा कि* ***'मॉस्को में अपनी माटी की सौंधी सौंधी सुगंध का अहसास 'दिशा' पत्रिका के कलेवर की विशेषता है।'*** *हिन्दी साहित्यकार श्री दामित्री बोव्कोव ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मुझे जब मॉस्को आने का सौभाग्य मिला तो इस पत्रिका के बारे में एक साथी विद्वान ने इसकी एक प्रति थमाते हुए परिचय दिया था तभी से आज तक इस पत्रिका के संपादन में सहयोग करते हुए लगता है कि* ***'यह पत्रिका नहीं बल्कि रूस में रहते हुए सभी भारतवंशियों व रूस की जनमानस की संचेतना का जीवंत दस्तावेज है।'*** *विश्व गायत्री परिवार मॉस्को के प्रचारक* ***डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्रा*** *ने इस पत्रिका के प्रति अपार मंगलकामना देते हुए कहा कि* ***'यह प्रवास में अपनी संस्कृति, संस्कार और ज्ञान को समाज में जीवित रखने का भागीरथ प्रयास है।'*** *वहीं हिंदी के प्रबल समर्थक और इतिहासवेत्ता* ***श्री जगवीर कादयान*** *ने अपना मत प्रकट करते हुए कहा कि* ***'जब किसी भी समाज के इतिहास का अध्ययन किया जाता है तो उसके समग्र स्वरूप को जानने के लिए अतीत में किए गए साहित्यिक प्रयासों का भी पटाक्षेप होता है। विदेशी धरा पर 'दिशा' भी एक ऐसा ही जीवंत इतिहास प्रस्तुत कर रही है।'*** *इस पत्रिका के संपादन में अहम भूमिका निभा रहे* ***श्री सुशील कुमार 'आजाद' और कुमार विनायक ने*** *भी अपने भावों को प्रकट करते हुए संयुक्त रूप से कहा कि* ***'साहित्य किसी भी जाति, समाज, संस्कृति और उसके वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की भी मर्यादाओं का निर्धारण करता है। हमें अपार प्रसन्नता है कि डॉ रामेश्वर सिंह अपने अथक प्रयासों से इस दिशा' की ओर निरंतर अग्रसर हैं।'***

इसी दिशा में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन मोरीशस में दिनांक 18-20 अगस्त 2018 को प्रवासी भारतीयों की ओर से विशिष्ट अतिथि के रूप में मॉस्को से रूसी-भारतीय मैत्री संघ के अध्यक्ष डॉ रामेश्वर सिहँ एवं उपाध्यक्ष श्रीमती नादेज़्दा सिंह को सादर आमंत्रित किया गया। इस समारोह में जहाँ डॉ रामेश्वर सिंह ने प्रवास में रहते हुए हिंदी के विकास के लिए किए जा रहे सार्थक प्रयासों की बात की वहीं पर श्रीमती नादेज्दा सिंह ने रूस में रामलीला के पुरोधा स्व.पद्मश्री गेनादिपेचनिकोव के जीवन एवं कृतित्व पर अपने विचार रख कर सभी हिंदी विद्वानों को अवगत कराया। मॉस्को की इसी संस्था 'दिशा' को अयोध्या शोध संस्थान उत्तरप्रदेश द्वारा रामलीला के मंचन को पुनः प्रारम्भ करने का निमंत्रण मिला जिसके अंतर्गत नवम्बर 2018 के पहले सप्ताह में यहाँ के थियेटर इंस्टीट्यूट के कलाकारों के माध्यम से रामलीला का मंचन अयोध्या में किया जायेगा यह भी एक गौरव का विषय है। इस महान कार्य के लिए अयोध्या शोध संस्थान अयोध्या के निदेशक डॉ. योगेंद्र प्रताप सिहँ, भारतीय राजदूतावास के महामहिम श्री डी.बाला वेंकेटेश वर्मा, जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका सुश्री महिमा सिखंड एवं येरशोव थियेटर इंस्टीट्यूट का रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

रूसी-भारतीय मैत्री संघ दिशा प्रति वर्ष हिंदी के विकास हेतु हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन रूस के कई विश्वविद्यालयों में आयोजित करती है जिनमें देश-विदेश से हिंदी के प्रकांड पंडितों को सादर आमंत्रित किया जाता है।

रूस-भारत की सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता को बढावा देने के लिए आपकी संस्था 'दिशा' ने इंडियन फिल्म जगत के साथ मिलकर बॉलीवुड़ फिल्म फेस्टीवल और अंतर्राज्यीय फिल्म महोत्सव को रूस के नामी शहरों में आयोजित करने का अनुबंध किया है।

**- दिशा जल्द ही एक दूसरी संस्था के साथ मिलकर 'दिशा-रेड़ियो' का प्रसारण शुरु कर रही है जिसमें माह में दो दिन हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित होंगे।**

अंत में यही कहा जा सकता है कि 'दिशा' अपने आप में रूसी-भारतीय मैत्री संघ की आत्मा है जिसके बैनर तले दोनों देशों की सभ्यताओं का सुखद अहसास और सांस्कृतिक चेतना के अंकुर प्रस्फुटित हो रहें हैं। दिशा से जुड़े हम सब लोग इसके माध्यम से भारतीयता की सौंधी सुगंध को अपनी अंतरात्मा में सहेजने का कार्य करते हुए से अनुभव करते हैं।

## (कविता) सार्थक सफर के मुहाने

सुनो
तुम्हारा पहाड़ से उतरना,
बल खाकर गुजरना,
कलकल हँसी से,
उछलते शुभ्र दांत से कण
हरियाली के किनारों का पल्लु,
कहीं तंवंगी तो कहीं अल्हड़ सा मचलना ।
सच कहो कहाँ से सीखा है ये सब,
सुनो, सच सच कहो
नदी तुम खामौश क्यों हो?
तुम्हारी ये लहरे और किनारे
मेरे जीवन की अभिलाषा,
जैसे क्यों हैं?
एक गतिशील तो दूसरा स्थिर,
मेरे अंतर्मन के भाव लहरे हैं
मगर इरादे अटल किनारे से हैं।

नदी तुम मेरे अस्तित्व की तरह,
आदि अनादि काल से बह रही हो,
सोचता हूँ कितनी अकेली हो तुम,
चाँदनी रात में भी तुम्हारा सहर्ष समर्पण,
निरंतर गति देता नजर आता है,
मेरे अपने जीवन की तरह ।
नदी तुम जीवन हो
जीवन ही हो तुम सदा से,
पहाड़ों से उतरता,
बल खाता हुआ तुम्हारा ये जीवन,
मर्यादाओं के किनारों के बीच,
सच्चाई से रुबरू होकर,
यथार्थ के सागर की तह तक
तुम्हारे सार्थक सफर के
मुहाने पर आज भी मैं हूँ ।

**कुमार विनायक**
**शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय**
**मॉस्को (रूस)**

# विश्व हिन्दी संगोष्ठी एक नज़र में।

**लेखक : कुमार विनायक**
**एम्बेसी स्कूल ऑफ इंडिया**
**मोस्को ( रूस )**

विश्व हिंदी संगोष्ठी सम्मेलन का प्रथम चरण कजान संघीय विश्वविद्यालय, साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था मुंबई, रूसी–भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' व अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित भारत रूस हिंदी अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें देश विदेश के लगभग 50 विद्वानों ने 'राम संस्कृति की विश्व यात्रा साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषय पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर राम काव्य की विश्व यात्रा पर डॉ. प्रदीप कुमार सिंह और संरक्षक डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह के द्वारा संपादित पुस्तक, डॉ. रामेश्वर सिंह की हिंदी पत्रिका दिशा और अयोध्या शोध संस्थान द्वारा पद्म श्री नेगादी पेचनीकोव जिन्होंने रूस में लगभग 35 वर्ष राम का रोल रामलीला में किया को समर्पित पुस्तक का विमोचन हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता कजान विश्वविद्यालय के कुलपति एवं जे एन सी सी मॉस्को के निदेशक श्री जय सुंदर जी थे। इस चरण के संचालक डॉ. योगेन्द्र प्रताप जी थे। दूसरे चरण में अध्यक्ष के रूप में वाराणसी के कुमार विनायक जी ने शानदार भूमिका निभाई। इसमें कई गणमान्य लोग भी उपस्थित थे। 'दिशा' पत्रिका को प्रवासी हिंदी पत्रिकाओं में श्रेष्ठ बताया गया जिसकी ओर से संचालक की जिम्मेदारी सम्पादक समूह के वरिष्ठ सदस्य श्री सुशील आज़ाद ,हिंदी प्राध्यापक भारतीय राजदूतावास स्कूल मॉस्को ने बाख़ूबी अदा की। 'दिशा' की ओर से इस अवसर पर शिक्षा शास्त्री अनिल कुमार 'भारती' की पुस्तक 'थ्री इन वन मैजिक' का अंतरराष्ट्रीय संस्करण भी साहित्यकारों को सप्रेम भेंट किया गया।

संगोष्ठी का दूसरा चरण मॉस्को यूनिवर्सिटी के सभागार में आयोजित किया गया जहाँ स्थानीय रूसी विद्वानों की संगत भारत से आए विद्वानों से हुई । कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी के निदेशक व जे एन सी सी के निदेशक महोदय श्री जय सुंदर ने अध्यक्षता की। अयोध्या शोध संस्थान, रूसी भारतीय मैत्री संघ दिशा के संयुक्त तत्वाधान में बहुत ज्ञानवर्धक कार्यक्रम हुआ। राम काव्य की प्रासांगिकता पर सार्थक चर्चा हुई । रूस की सबसे पुरानी हिंदुस्तानी संस्था 'हिंदुस्तानी समाज' के विद्वान साथियों ने मॉस्को में सभी देशी–विदेशी साहित्यकारों का अभिनंदन किया। समाज के प्रधान श्री कश्मीर सिंह ने आभार वक्तव्य दिया। वरिष्ठ सदस्यों में श्री योगेन्द्र नागपाल व विदुषी श्रीमती प्रगति जी ने भी अपने बहुमूल्य सुझाव साँझे किए। अंत में मेज़बानी संस्था 'दिशा' के अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर सिंह जी ने भी व्यक्तिगत तौर पर सभी का आभार ज्ञापित किया ।

***भाग–3 : विश्व हिंदी संगोष्ठी का तीसरा चरण सेंटपिटर्सवर्ग के सरकारी विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ जहाँ भारतीय विद्वानों के साथ रूसी हिंदी प्राध्यापकों व बच्चों ने भाग लिया । हिंदी के वर्तमान और भविष्य को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। जिसमें डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. वन्दना, डॉ. सविता सिंह, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, डॉ. सत्यनारायण आदि ने अपने विचार दिए । वहाँ एक काव्य संध्या का भी आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय हिंदी विद्वानों ने भी शिरकत की।***

# त्रिभाषा तुलनात्मक ज्ञान विकास पद्धति

## भाषाओं के पुलों से देशों को देशों से जोड़ने का विश्वव्यापी मिशन : शिक्षाविद् अनिल कुमार 'भारती' की रूस यात्रा का संस्मरण।

**अनिल कुमार 'भारती'**
**शिक्षाविद्, लेखक व अध्यापक**
**सनातन धर्म संस्कृत इंग्लिश सी.सै. स्कूल, पटियाला ( पंजाब )**

***त्रिभाषा तुलनात्मक ज्ञान विकास पद्धति को लेकर इस एक शख़्स के मन में ख़्याल आया कि भारत बहुभाषी देश है, इसके पूरे भूगोल को एक सूत्र में बांधने के लिए हमें कोई ऐसा रास्ता खोजना चाहिए जो एकता की मिसाल बन सके। इसी एक विचार को लेकर पटियाला के शिक्षाविद् श्री अनिल कुमार 'भारती' कई वर्षों से लगे रहे और एक ऐसी पुस्तक का खांचा खींचने और इस विचार को व्यावहारिक बनाने में सफल हुए जिसे हम सब 'थ्री-इन-वन मैजिक' पुस्तक नाम से जानते हैं। इसी पुस्तक के अंतरराष्ट्रीय संस्करण का विमोचन 14 अप्रैल 2018 को मॉस्को ( रूस ) में धूमधाम से हुआ। अपनी इसी यात्रा के संस्मरण को प्रस्तुत किया है श्री अनिल कुमार 'भारती' ने।***

मॉस्को में विगत कई वर्षों से हिन्दी की सेवाकर रहे, रूसी–भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' के माध्यम से दोनों देशों को एक दूसरे के समीप लाने और दोनों देशों की दोस्ती को प्रगाढ़ बनाने के लिए प्रयास कर रहे डॉ. रामेश्वर सिंह व भारतीय राजदूतावास स्कूल के हिन्दी अध्यापक श्री सुशील कुमार, श्री कुमार विनायक, श्री जगवीर सिंह कादयान, पंजाबी सभा, मॉस्को के अध्यक्ष श्री प्रमोद धीमान जैसे दिग्गज लोग मेरी इस मॉस्को यात्रा के प्रणेता बने। श्री सुशील कुमार आज़ाद और आवाज़ के जादूगर श्री कुमार विनायक ने डॉ. रामेश्वर सिंह के साथ मिलकर मेरे मॉस्को पहुंचने से पहले ही यात्रा के बारे में बहुत प्रचार और प्रसार कर दिया था। मॉस्को स्थित गुरुघर में मेरी यह पुस्तक पहले ही नि:शुल्क बांटी जा चुकी थी। क्योंकि रूसी–भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' का उद्देश्य भी भारतीय भाषाओं का प्रचार–प्रसार करते हुए रूस के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों को मजबूत करना है और मेरी यह पुस्तक इस दिशा में कारगर सिद्ध होगी।

जब मैं मॉस्को पहुंचा तो मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी के साउथ एशियन अफ्रीकन इंस्टीट्यूट में रूसी और भारतीय विद्वानों द्वारा एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में मेरी इस नई खोज की पुस्तक को सभी ने खुले दिल से सराहा, वहीं इसमें आगे और सुधार के लिए सुझाव भी दिये । इतना ही नहीं, उन्होंने इस त्रिभाषा पर आधारित पद्धति मे रुसी भाषा का समावेश करके इसे बहुभाषा.... तुलनात्मक ज्ञान विकास पद्धति का स्वरूप प्रदान करने का परामर्श भी दिया । जब मैंने उन्हें बताया कि यह बात तो पहले से ही मेरे एजेंडे में है और श्री सुशील कुमार, डॉ रामेश्वर सिंह, कुमार विनायक जी, श्रीमती इंदिरा गजेविया पहले से ही इस दिशा में सहयोग दे रहे हैं तो वहाँ मौजूद विश्व के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान/विदुषी श्रीमती खखलोवा, श्री मती गुजेल श्री अनिल जनविजय आदि ने अपने सम्पूर्ण सहयोग करने का वचन भी दिया ।

*अपनी समूची रूस यात्रा के दौरान मैंने हर जगह की सुंदरता को अपनी आँखों के कैमरे में क़ैद कर लिया और जहाँ-जहाँ मुझे अपना व्यक्तव्य देने का मौका मिला वहाँ सनातन धर्म संस्कृत इंग्लिश सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, पटियाला से प्राप्त ज्ञान और संस्कारों को बताने का मौका भी नहीं छोड़ा। जिससे मुझे सतत् ही इस ऐतिहासिक विद्यालय पर गर्व का अनुभव होता रहा। इस यात्रा के दौरान मैंने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताते हुए कहा कि पूरे विश्व के देशों को भाषा के माध्यम से जोड़ना मेरा उद्देश्य है । यह काम भाषा के द्वारा दिलों को दिलों से जोड़ने और देशों को देशों से जोड़ने के लिए किया जा रहा है। इस दिशा में मैं सौभाग्यशाली हूँ कि 14 अप्रैल 2018 को पंजाबी सभा के एक भव्य कार्यक्रम में मेरी इस पुस्तक के अंतरराष्ट्रीय अंक का सार्वजनिक रूप से विमोचन हुआ। इस विमोचन को याद करके मैं आज भी स्नेह और आनंद के आँसुओं से भीग जाता हूँ । इस समारोह में यह पुस्तक नि:शुल्क वितरित भी की गई ताकि भारतीय परिवारों में इन भाषाओं का प्रचलन जारी रहे। इस 'बैसाखी मेला 2018' में मैं विशेष अतिथि तो था ही, लेकिन इस पुस्तक के माध्यम से समस्त रूसी और प्रवासी भारतीयों का जो स्नेह मुझे मिला, वह आजीवन विशेष अतिथि सत्कार देता रहेगा । मैं श्री प्रमोद धीमान, भारतीय राजदूतावास के शिक्षा प्रभारी श्री आलोक राज सहित सभी का आभार व्यक्त करता हूँ । इस समारोह के बाद कई सम्मेलनों एवं कॉन्फ्रेंसों मे शामिल होने का न्यौता मिला । उसी समय डॉ रामेश्वर सिंह जी से जो बातचीत हुई और उनको मैंने अपना मिशन बताया तो उन्होंने दिशा के माध्यम से दो बड़े भव्य कार्यक्रम दो अलग-अलग यूनिवर्सिटीज़ में रखे और इन कार्यक्रमों में काफी सम्मान और सलाह मिली हालांकि मैं ऐसा कभी सोच भी नहीं सकता था कि विश्व के सबसे बड़े देश में मेरी पुस्तक का इस तरह से मंथन और विमोचन होगा।*

*मॉस्को आने के लिए श्री प्रमोद जी ने बैसाखी के कार्यक्रम में बुलाने का आग्रह किया। वहीं श्री सुशील कुमार, श्री कुमार विनायक श्री परमजीत सिंह मल्ही, श्री जगवीर सिंह ने फोन पर मेरा हौसला बढ़ाया हालांकि मैं आर्थिक रूप से काफी दिक्कतों से गुज़र रहा था फिर भी मैंने पंजाब नेशनल बैंक से लोन लेकर रूस आने और प्रवासी भारतीयों के लिए, उनकी वर्तमान और आगामी पीढ़ियों के लिए मैं यह पुस्तक भेंट करने के लिए चला आया । मेरे आने के पीछे मेरे इन सभी मित्रों का स्नेह निमंत्रण था । इस यात्रा के दौरान मुझे अपने बचपन की वो सारी बातें याद आयीं, जब सोवियत रूस से छपने वाली चिकने पृष्ट वाली सोवियत नारी जैसी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थीं और रूस के प्रति जो सहज लगाव था वो इस बात में भी छुपा हुआ था कि मैं कभी न कभी रूस की यात्रा करूँ । मैं अपने तमाम मित्रों और शुभचिंतकों को हार्दिक मंगलकामना देता हूँ ।*

## कविता

सोचती हूँ जब मैं,
तो सोचती रह जाती हूं
खोती हूँ जब मैं, तो
हसीं ख़्वाबों की दुनिया में खोती रह जाती हूँ,
घूम-फिर के मैं ख़ुद को मझधार में ही पाती हूँ।
की कोशिश कई दफ़ा हमने
कि पढ़ सके राज़ की वो किताब
जब सोचा कि सीख लें कुछ नया-सा
तो ज़िंदगी ने कहा -
आ मैं तेरा हिसाब-किताब भी कर दूं,
वो पन्ने कोरे थे भर दिए अब जब कई रंग हमने
तो, ख़ुद को, तकलीफ़ में पाती हूँ,
हाँ, मैं हसीं चाँदनी में ख़ुद को मदहोश-सा पाती हूँ।

**निशा नेगी 'स्नेही'**

## ग़ज़ल

शब्दों से हम लय तक पहुँचे
भाव विकल हिरदय तक पहुँचे
अनजाने थे कल तक लेकिन
देखो अब परिचय तक पहुँचे
प्रणय यात्रा करने वाले
आखिर को परिणय तक पहुँचे
शब्द कहाँ तक उन्हें रोकते
मौन मगर आशय तक पहुँचे
नीर क्षीर का भास हुआ तो
धुँध हटी , निर्णय तक पहुँचे
कब तक उड़ते ऊँचाई पर
खग सारे आलय तक पहुँचे
अनहद नाद सुना कानों ने
लिप्त हुए , चिन्मय तक पहुँचे
भेद दुई का मिटा जो औचक
अंतिम आत्म विलय तक पहुँचे

**सुनीता लुल्ला**

# आस्था

**सुशील कुमार 'आज़ाद'**
**केन्द्रीय विद्यालय मॉस्को ( रूस )**

एक अध्यापक हूँ मैं,
कई जन्मों से साधक हूँ,
उन तमाम मूल्यों का जिन्हें,
सभी मज़हबों के लोग,
युगों से तलाश रहे हैं–अपनी इबादतों के इल्म में।
मैंने कभी कोई स्वार्थ नहीं साधा,
साधा है तो बस एक साधना को ही साधा है,
जो एक मानव को इंसान के मुकम्मल जहान तक,
ले जाती है एक पगडंडी की तरह।
हाँ सभी पदार्थों का दाता हूँ मैं,
लेकिन अपने लिए कभी भी,
किसी भी युग में नहीं माँगा,
माँगा है तो केवल,
हालातों से लड़ने,
आँधियों में अड़ने,
अभावों से झगड़ने के लिए,
अपार अपार आस्था।
मेरा कर्म, बल पर नहीं,
आस्था पर खड़ा है,
किसी अदृश्य शक्ति से,
संचालित है यह,
युगों–युगों से,
आस्था का शक्ति चक्र,
जिसने भी शिष्य बनकर पाया,
अडिग रहा, सफल रहा, नियामक रहा।
आस्था के बल पर॥
इधर जाऊँ,
उधर जाऊँ,
आगे जाऊँ,
पीछे जाऊँ,
उपर जाऊँ
नीचे जाऊँ,
आकाश में उड़ नहीं सकता ,
धरातल फोड़ नहीं सकता ,
भटक–भटक टांगें थरथरा गयीं,
मंज़िल तलाशते आँखें पथरा गईं ,
भूख प्यास नहीं,
किसी की आस नहीं,
उम्मीदों का दीया फड़फड़ाये,
जाने कौन घड़ी बुझ जाये,
कोई तो मंज़िल का पता बता दे,
मुझे अपनों से मिला दे !

# तिब्बत की सीमा पर-राहुल सांकृत्यायन

डॉ सविता सिंह

इस यात्रा साहित्य में लेखक ने अपनी तिब्बत यात्रा का वर्णन किया है। इसमें पहाड़ी इलाके का बारीकी से चित्रण किया गया है । पाठक इसे केवल पढ़ता ही नही है बल्कि पढ़ते पढ़ते चढ़ाई द्वारा सारी जोत के दर्शन भी कर लेता है ।रास्ते में आनेवाली कठिनाइयां और उन्हें महसूस करते हुए वापस आना यही उसकी यात्रा विशेष की विशेषता है ।लेखक लद्दाख के तहसीलदार की मदद से एक चपरासी गंगाराम को अपने साथ लेकर खर्दोड़ की ओर घोड़े पर सवार होकर चल पड़ते है ।रात के दो बजे ही निकल पड़ते हैं ।सर्दी ऐसी की शरीर का कोई भी अंग बिना ऊनी कपड़े के खुला नहीं छोड़ा जा सकता था ।दिन में यात्रा करना कठिन है क्योंकि बर्फ के पिघलने पर घोड़ों के पैर उसमें धंसने लगते हैं।

चौदह हजार फुट की चढ़ाई पर चढ़ना यानी आटे दाल का भाव मालूम पड़ना ।लेखक लिखते भी है- 'यदि घोड़े पर न होते तो आटे चावल का भाव मालूम हो जाता।' ऐसी चढ़ाई पर घोड़ों को भी दिक्कत हो रही थी ।वो भी हॉफ रहे थे और जगह जगह रुक जाते थे ।कश्मीर की यात्रा करने के कारण लेखक को पहाड़ी इलाके की सर्दी का पूरा एहसास था ।अठारह हज़ार फुट ऊपर खर्दोड. का जोत तिब्बत के कठिन जोतों में से एक माना जाता है ।पहले लेखक ने वहां पहुंचकर लद्दाखी लोगों से बातचीत की। थोड़ा विश्राम कर बिना घोड़ों के ही नीचे उतरना आरम्भ किया और तब ज्ञात हुआ कि उतराई चढ़ाई से भी कठिन है ।आगे चलकर उन्हें शियोक नदी मिली जो सिंधु नदी की ही दो प्रधान धाराओं में से एक है ।यह शियोक की उपत्यका है।

शियोक के आगे एक गाँव में रात गुजारते हैं और दूसरे दिन लेखक रिहोड़ लामा से मिलकर जोत की तरफ चल पड़ते हैं। यह जोत भी खर्दोड् की तरह बहुत ऊंची है। यहां लोग तिब्बती भाषा में बोल रहे थे। सत्तू भर की खेती कर लेते हैं ।इन सभी का गुजारा भेड़,याक के दूध और माँस से होता है ।इसके उपरांत दो उपत्यकाएं छोटे से तालाब को अपना जल विभाजक बनातीं थीं। मन-पङ-गोड. झील के पास उपत्यका टेढ़ी-मेढ़ी हो गई थी और ऊपर चढ़ने के बाद खेतों में सिर्फ छोटी मटर दिखलाई पड़ी। चौदह हज़ार फुट से ऊपर भी खेती हो सकती है ,इसका यह एक उदाहरण था। लद्दाखी लोग जोत को देवता का प्रताप समझते हैं ।एक रात ठहर कर लेखक दूसरे दिन फिर एक नई जोत की ओर चल पड़े। लद्दाख के कुत्ते बहुत बड़े और खूंखार होते हैं। घोड़े पर बैठी सवारी का शिकार भी कर बैठते हैं। खासतौर से चांग- थांग के कुत्ते हमला करते हैं। लेखक ने यहां स्त्री- पुरुष को स्वतंत्र विचरण करते हुए देखा तो उनके मन में भी स्वच्छन्द विचरण के भाव जाग उठे। वह कहते हैं----- कि 'क्या ही अच्छा होता कि मैं भी इसी तरह कुछ भेड़ों ,एक दो गधों और एक तिब्बती तरुणी के साथ एक जगह से दूसरी जगह घूमता- फिरता । जहां मन आता वहां तंबू लगाता। तरूणी और मैं मिलकर गधों और भेड़ों से सामान उतारते । दो बड़े कुत्ते हमारी चीजों की रखवाली करते ।तरुणी चाय बनाती फिर उस निर्जन निर्वक्ष नंगी पर्वत उपत्यका में हम दोनों एक निर्द्वंद विचित्र से जीवन बिताते ।'

लेखक की ईमानदारी को भी जान लेना आवश्यक है ।वह इस बात को बखूबी जानते हैं कि यह भाव मात्र एक लालसा है और जीवन में न जाने कितनी लालसाएं वक्त बेवक्त उठती हैं,लेकिन उनमें से पूरी कितनी होती हैं, यह तो वक्त पर छोड़ना ही उचित होगा। वह कहते हैं-------क्या लालसा मात्र से जीवन को बढ़ाया जा सकता है? यह समझने पर भी मेरी लालसा दबी नहीं। उसने एक कोने में स्थाई स्थान ग्रहण किया।

यहां से लेकर बुशहर रियासत तक बढ़े। गंगा राम और उसके साथी यहां से लेह लौट गए। खट्टे- मीठे अनुभवों के साथ लेखक आगे बढ़ते गए। पिस्सुओं का आक्रमण सहन करते हुए लेखक रारंग जोत की ओर बढ़े। दरअसल रारंग एक गाँव का नाम है। यहाँ गाँव के मुखिया से लेखक मिले और रात भर रुके। लेकिन स्वागत के मामले में बड़ा रूक्ष गाँव लगा ,पानी को भी न पूछा। लेखक ने इस गाँव का नया नामकरण कर दिया और कहा कि-'दूसरे दिन भरिया के साथ मैं इस स्वागत शून्य गाँव से चल पड़ा।' यह इलाका थोड़ा गर्म था और ऊपर से नीचे हजार फुट तक 80डिग्री के झुकाव पर

करीब करीब धूल और छोटे पत्थरों की एक धार गिर रही थी। लेखक अचंभित थे पर भरिया कूद- कूदकर निकल रहा था। एक और दृश्य लेखक को चौकाने वाला मिला । जब भरिया रस्सी के सहारे नदी के ऊपर से इस ओर से दूसरी ओर गया। धूलिकी नदी को लेखक ने भी तार के सहारे पार किया।

इसके उपरांत लेखक किन्नौर (जो किन्नर का अपभ्रंश है) पहुंचे। यहां देवदार के वृक्ष और हरियाली देखकर मन को शांति मिली। इसके बाद हिमालय से होते हुए सुम्नम , सुम्नम से कनम, चिर्मी, सराहन, रामपुर, कोटगढ़, शिमला, मेरठ और अंतत: अपने घर छपरा पहुँचे।

लेखक ने अपने अनुभवों को इस ढंग से प्रस्तुत किये है कि पाठक न चाहते हुए भी अपनी यात्रा मन ही मन आरम्भ कर देता है। यहीं पर यात्रा साहित्य का उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। इस यात्रा साहित्य की विशेषता यह है कि लेखक ने पहाड़ी मार्गों का वर्णन कर जहाँ एक ओर पाठकों के रोंगटे खड़े किये हैं, वहीं दूसरी ओर ऊंचाई पर चढ़ते हुए जानवरों और मनुष्य के फेफडों की स्थिति को भी बताया है। इसमें उन्होंने संस्कृत तदुभव उर्दू, अरबी, फ़ारसी शब्दों का प्रयोग खुलकर किया है तथा हिंदी मुहावरों को नया रूप भी दिया है।

# ग़ज़ल
# यूँ कहने को तो पहुँचा है

**लेखक : सागर सूद**
**संपादक एवं प्रकाशक,**
**साहित्य कलश पत्रिका एवं पब्लिकेशन**

यूँ कहने को तो पहुँचा है ये इन्सां आसमानों में
मगर इंसानियत बिकते हुए देखी दुकानों में

नहीं किरदार अब बाकी यहाँ के हुक्मरानों में
ज़मीं तो खा चुके नज़रें गड़ी हैं आसमानों में

हमारे सर पे होगा शामियाना गर बुज़ुर्गों का
रहेगी हर ख़ुशी फिर देखना अपने मकानों में

मुलम्मा झूठ का ग़ज़लों पे मेरी चढ़ नहीं सकता
हक़ीक़त आएगी तुमको नज़र मेरे तरानों में

ग़रीबी, बेबसी, मजबूरियों की तोड़ कर बेड़ी
मैं अपना नाम लिक्खूँगा किसी दिन आसमानों में

कोई उर्दू का दीवाना, कहीं तारीफ़ हिन्दी की
दिलों की बात कर, रक्खा नहीं कुछ भी ज़ुबानों में

हैं दिल के बादशाह हम भी दिलों पर राज़ करते हैं
हमारा दिल नहीं लगता इन ईंटों के मकानों में

मिटा देते हैं जाँ अपनी वतन के वास्ते 'सागर'
ये जज़्बा है हमारे देश के बाँके जवानों में

# विश्वाध्यात्म के विकास में तपोनिष्ठ वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य का योगदान

**लेखक : जगवीर कादयान**
**अखिल विश्व गायत्री परिवार मॉस्को।**

युग परिवर्तनशील होता है। प्रत्येक युग की अपनी अपनी विशेषताएँ उभरती हैं। इन सभी विशेषताओं के बुनियादी रूप में उस युग के निर्माणकारी शक्तियों का अहम योगदान होता है। यह सब बदलाव या उपलब्धियाँ उस समाज की परिस्थितियों और समस्याओं की माँग पर भी आधारित होता है। रूस, चीन जैसे साम्यवादी देश और विश्व के अन्य देशों में जहाँ ईश्वर या परमात्मा जैसी सत्ता को एकदम नकार दिया गया हो वहाँ आध्यात्म के प्रचुर अंकुरों का प्रस्फूटन भी एक क्रांतिकारी आस्था का परिणाम है। जब मैंने इस दिशा में शोधपरक चिंतन किया और मॉस्को के लोगों में इस आधार को खोजने में समय लगाया तो पाया कि यहाँ के अधिकांश कर्मकांडी जीवन जीने वाले लोग भारतीय वाड्मय और संस्कृति से प्रभावित हैं। यहाँ डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्रा जी ने मुझे बहुत सहयोग दिया उनका मत था कि जब भोग से मन ऊब जाए तो योग की ओर अग्रसर होना मानवीय मानसिक विशेषता है। उन्होंने तपोनिष्ठ आचार्य पं.श्रीराम शर्मा के साहित्य का दिग्दर्शन कराया, बस यहीं से विश्व आध्यात्म के विकास का नया सूत्र पकड़ में आया। मैं स्वयं समाज के लोगों के साथ हवन यज्ञ पद्धति से जुड़ा और पाया कि इन सबके मूल में हमारी संस्कृत भाषा और महाविज्ञान गायत्री ही समाई हुई है। यहाँ के लोग अबाध गति से संस्कृत का उच्चारण और कर्मकांड करते हुए सांसारिक वासनाओं से उपर उठ रहे हैं। इस विकास में हिंदी के साहित्य का भी प्रचुर योगदान है। साहित्य और समाज के गहरे रिश्तों की नींव को पहचान पाया। रूस के सांस्कृतिक परिवेश में मैंने इस शोध का आगाज़ किया कई धार्मिक संस्थाओं और केंद्रों का अध्ययन किया तो पाया कि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य का एक क्रांतिकारी प्रभाव है। यहाँ के लोग संस्कृत में मंत्रोच्चारण करते हैं। चाहे वे इन मंत्रों को अपनी रशियन भाषा में ही क्यों न लिपिबद्ध करके बोल रहे हों। विदेशी धरती पर भारतीय वाड्मपय का सांस्कृतिक प्रभाव भारतीय संस्कृति व सभ्यता का प्रत्यक्ष विकास बन कर उभर रहा है। परमपूज्य तपोनिष्ठ वेद्मूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने विभिन्न भाषाओं में 3200 पुस्तकों की श्रृंखला तैयार की थी जो आज विश्व के लगभग 80 देशों में उनकी राष्ट्रीय एवं स्थानीय भाषाओं में अनुवादित होकर संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन का कार्य कर रही हैं। इस दिशा में 'प्रज्ञा-अभियान', 'अखंड ज्योति', 'सुनसान के सहचर' आदि पुस्तकों ने साहित्य की परंपरा का प्रगाढ़ रूप प्रस्तुत किया है। मुझे इस बात का कई दिनों तक आश्चार्य बना रहा कि रूसी लोगों में इतनी श्रद्धा भक्ति का विकास आख़िर किस तरह संभव हो रहा है। एक हवन यज्ञ में एक सुंदर सुकुमार रूसी नवयुवक का लैप्टॉप के माध्यम से हिंदी रशियन और संस्कृत का उच्चारण करते और पठन करते हुए देखना तकनीक का मानव के आध्यात्मिक विकास में योगदान का ही सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जब मैंने गुरुदेव के साहित्य का मनोयोग से

अध्ययन किया तो गायत्री के वैज्ञानिक प्रभाव की व्याख्या का नया रूप देखने को मिला। उनके द्वारा 'गायत्री सर्व सिद्धि योग' का रास्ता दिखाना भी आज के दु:ख भरी दुनिया के लिए साहित्य के माध्यम से रोग-निवारण का सरल उपाय ही तो है। आज का मानव जिस संत्रास और व्यथा से जूझ रहा है उसका निदान केवल और केवल सद्साहित्य ही है। पूज्य गुरुदेव ने अपने साहित्य रचना के कई पड़ावों पर इंसान को सावधान करते हुए अपने अनुभव से इस बात का प्रबल समर्थक बनाया है कि आध्यात्मिक विकास और भाषा का गहरा संबंध है। जब भी किसी समाज या देश का विकास होगा वह वहाँ के लोगों की आत्मिक भूख और ज्ञान की पिपासा की परिशांति से ही होगी। इस दिशा में भी यह साहित्य पूरे विश्व का प्रतिनिधित्व करता नज़र आ रहा है। कोई भी सद् साहित्य किसी न किसी भाषा में अवश्य प्रकट होता है लेकिन उसकी सार्वभौमिक उपादेयता निरंतर बनी रहती है। ऐसा ही कुछ पं. श्रीराम आचार्य जी के साहित्य से अपेक्षा आज भी विश्व को है जो निरंतर संसार के बहुत बड़े भाग की माँग होता जा रहा है। यह है एक साधारण साहित्य का विश्व अवलोकन और विस्तृत फलक जिसे अमर साहित्य की कोटि में रखा जा सकता है। इनके साहित्य की उपादेयता और 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' के फलक को देखते हुए 'शांतिकुंज हरिद्वार' को इस साहित्य का मुख्य केंद्र बनाकर प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इस केंद्र से लगभग मासिक, त्रैमासिक पत्रिकाओं के साथ-साथ कई बड़े ग्रंथों का प्रकाशन प्रगति पर रहता है। जिसे पूरे विश्व की मानव जाति के लिए उनकी सुलभ भाषा और लिपि के अनुरूप ढाल कर मानव को 'नए-युग' के लिए तैयार किया जा रहा है। वास्तव में यह है एक साहित्य की 'ब्रह्मशक्ति' जिसे आम आदमी के मानसिक तनाव को दूर करके 'पूर्ण मानव' की ओर अग्रसर किया जा रहा है।

इनके साहित्य की अमर रचनाओं में एक है 'गायत्री महा विज्ञान' इस ग्रंथ में आचार्य श्री ने अपनी गायत्री साधना के बल पर उसके आध्यात्मिक प्रभाव का सूक्ष्म उल्लेख किया है। वेद मंत्रों में श्रेष्ठ इस मंत्र का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, योगात्मक और अन्य कई पहलुओं से व्यावहारिक परीक्षण प्रस्तुत किया है। आज इस ने समाज में 'देव संस्कृति' की संकल्पना को साक्षात्ज़ रूप में विश्वविद्यालय का दर्ज़ा देकर किया गया है। इस विश्वविद्यालय में भारतीय ही नहीं हजारों विदेशी साधक भी अपनी आध्यात्मिक भूख का शमन करते हैं। वर्तमान में पूज्य श्री प्रणव पांड्या जी इसके कुलाधिपति के पद एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के मुखिया पद से दिव्य ज्योति मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। उनके साहित्य साधना में अखंड ज्योति पत्रिका का मासिक संपादन करना और देश-विदेश के लिए विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवादित होकर प्रसारित करना भी साहित्य के माध्यम से 'एक विश्व-एक राष्ट्र' की संकल्पना का साकार रूप है। यह है एक साहित्य की अंतर्साधना से विश्व परिवर्तन की दिशा। ॥ ॐ शांति ॥

# अंधेर नगरी :एक प्रासंगिक प्रहसन

**डॉ. ऋचा शर्मा,**
**अध्यक्ष - हिंदी विभाग,**
**अहमदनगर कॉलेज, अहमदनगर**

कवि, नाटककार, निबंधकार, पत्रकार आदि बहुमुखी प्रतिभा संपन्न भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर सन् 1850 को तथा मृत्यु 6 जनवरी सन् 1885 को हुई थी। उनका जीवन-काल मात्र 35 वर्ष का था। भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्यिक अवदान को महत्व तथा सम्मान प्रदान करने हेतु सन् 1850 से सन् 1900 तक की कालावधि को हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग कहा जाता है। भारतेंदु ने साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध किया। नाट्य विधा के क्षेत्र में तो उनके अनेक प्रयोग लक्षित होते हैं। इनके मौलिक नाटक हैं - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, प्रेम योगिनी, श्रीचंद्रावली, विषस्य विषमौषधम्, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेरी नगरी, सती प्रताप। इनकी अनूदित नाट्य कृतियां हैं - विद्यासुंदर, पाखंड विडंबन, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी, सत्य हरिश्चंद्र, मुद्रा राक्षस, भारत जननी, दुर्लभ बंधु।

भारतेंदु की नाट्य शैली के विषय में प्रसिद्ध इतिहासकार रामचंद्र शुक्ल का मत है - 'नाटकों की रचना शैली में उन्होंने मध्यम मार्ग का अवलंबन किया। न तो बंगला के नाटकों की तरह प्राचीन भारतीय शैली को एक बारगी छोड़ वे अंग्रेजी नाटकों की नकल पर चले और न प्राचीन नाट्यशास्त्र की जटिलता में अपने को फँसाया। अंधेर नगरी की रचना करते समय भारतेंदु की आयु संभवत: 30-31 वर्ष रही

होगी। भारतेंदु के समय में अंग्रेज भारत देश पर पूर्णतः अधिकार स्थापित कर चुके थे। वे भारतीयों को मूर्ख समझते थे। वे उन्हीं को राजा या जमींदार बनाते थे जो उनके इशारों पर चलते थे।

1) रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास – पृ. 314 सकें । अंधेर नगरी के माध्यम से भारतेंदु ने यह स्पष्ट बताना चाहा कि संपूर्ण भारत में अंधकार का साम्राज्य व्याप्त था। भारतेंदु इस तथ्य से भी अवगत थे कि अँग्रेज भारत की धन–संपदा को लूटकर उसे खोखला कर रहे हैं –

अंग्रेज राज सुख साज सबै अति भारी
पै धन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारी।

भारतेंदु की अनुभूतियों का लघु प्रतीक है – अंधेर नगरी अंधेर नगरी की वस्तु लघुकाय है। एक निरंकुश राजा है जिसे चौपट्ट राजा कहा गया, उसका नामकरण तक नहीं किया गया है। उस राजा के शासन में जनता खुश है। फरियादी की बकरी के मरने पर न्याय करते हुए राजा स्वयं ही फाँसी पर चढ़ जाता है। यही अंधेर नगरी का मूल कथानक है। संपूर्ण कथानक 6 अंकों में विभाजित है। वास्तव में ये 6 दृश्य ही हैं।

अंधेर नगरी की कथावस्तु को काल्पनिक कहना ही उचित है 7 भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी उर्वरा कल्पना शक्ति से हास्य– व्यंग्यात्मक रूप में राज्य की स्थितियों पर प्रकाश डाला है। 'अंधेर नगरी' शीर्षक राजा की शासन तथा न्याय प्रक्रिया के निरंकुश और मनगढ़त होने का प्रतीक है।

अंधेर नगरी का कथानक संक्षेप में इस प्रकार है – एक गुरु अपने दो शिष्यों नारायणदास तथा गोबरधनदास के साथ इधर–उधर घूमते हुए अंधेरी नगरी में पहुँच जाते हैं। गोबरधनदास भिक्षा लेने जाता है और थोड़ी ही देर में बड़ी भारी गठरी लेकर आता है। सात पैसे भीख में मिले थे उसी से गोबरधनदास साढ़े तीन सेर मिठाई लाता है। वह महंत को बताता है कि यहाँ–

अंधेर नगरी चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी,
टेक सेर खाजा।

महंत कहते हैं कि ऐसे स्थान पर रहना ठीक नहीं, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा हो, वे कहते हैं –

कोकिल वायस एक सम,
पंडित मूरख एक।
इंद्रायन दाड़िम विषय,
जहाँ न नेकु विवेक।।
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक – वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय।।

ज्ञानी महंत अर्थात गुरु जी के बहुत मना करने पर भी गोबरधनदास उनकी बात नहीं मानता और अंधेर नगरी में ठहर जाता है। वह आनंदपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता है और सोचता है –

गुरुजी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था 7 माना कि देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या ? अपने किसी राज काज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज मिठाई चाभना, मजे में आनंद से राम–भजन करना 7

गोबरधनदास जब सुख–सागर में डूबा था ऐसे ही समय राजा के प्यादे उसे पकड़ लेते हैं और उसे फाँसी पर चढाने की बात कहते हैं। गोबरधनदास प्यादों से पूछता है कि मुझ बेकसूर को फाँसी क्यों चढ़ा रहे हो ? एक प्यादा कहता है कि आप बड़े मोटे हो इसलिए फाँसी चढ़ा रहे हैं। वे उसकी बात का सही उत्तर नहीं देते। प्राणों को दाँव पर लगा पाकर उसे अपने गुरु जी का स्मरण होता है। गुरु जी ने कहा था कि यदि कोई संकट हो तो मुझे स्मरण करना। गुरु जी उसके सम्मुख उपस्थित हो जाते हैं वे गोबरधनदास के कान में अपनी योजना बताते हैं। गुरु जी राजा से कहते हैं कि इस समय जो मरेगा वह सीधा स्वर्ग जाएगा। मंत्री, कोतवाल अंत में राजा भी फाँसी पर चढ़ने को तैयार हो जाता है। चौपट्ट राजा स्वयं टिकठी पर फाँसी के लिए खड़ा हो जाता है। अपनी विवेक संपन्न योजना से गुरु जी उसे मृत्यु पाश से बचा लेते हैं। और कहते हैं –

जहाँ न धर्म न बुद्धि,
नहिं नीति न सुजन समाज।
ते ऐसहिं आपुहि नसैं, जैसे चौपट राज।।

1) तीसरा दृश्य – अंधेर नगरी
2) पाँचवा दृश्य – अंधेर नगरी

'अंधेरी नगरी' प्रहसन है। इसमें 24 पात्र हैं और सभी पात्र जीवंत तथा प्रभावशाली हैं। पात्र – योजना अत्यंत सार्थक है तथा परिस्थितिजन्य प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम भी। प्रहसन होने के कारण इसमें हास्य रस की प्रधानता है परंतु हास्यपूर्ण वातावरण तथा संवाद भी अंधकारपूर्ण साम्राज्य और राजा की निरंकुशता उजागर कर देते हैं। भारतेंदु की नाट्य – शैली के विषय में डॉ. मिथिलेश पाण्डेय लिखते हैं –

'भारतेंदु की रंग दृष्टि 'बंगला' के आधुनिक प्रयोगशील पक्ष से प्रभावित हुई थी। पारसी – थियेटर और बंगला नाट्य – मंच के अलावा शुद्ध भारतीय नाट्य – दर्शन के आधार का भी भारतेंदु जी ने सार्थक उपयोग किया। उनकी दृष्टि में साहित्य, मनोरंजन मात्र नहीं था अपितु जन जागरण एवं जनप्रशिक्षण का सशक्त साधन भी था ...'

भारतेंदु हरिश्चंद्र अपनी लेखनी द्वारा एक ओर हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे थे तो दूसरी ओर अपनी देश – प्रेम और राष्ट्रीय चेतना की भावना को व्यक्त कर देशवासियों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा भी दे रहे थे। लोक – नाट्य शैली में लिखा गया यह प्रहसन अंधेर नगरी अपने कथ्य के कारण आज भी प्रासंगिक ह

1) भारतेंदु ग्रंथावली – भाग – 2–1, भूमिका – डॉ. मिथिलेश पांडेय

संदर्भ ग्रंथ –

1) भारतेंदु ग्रंथावली – खंड – 2 – डॉ. मिथिलेश पाण्डेय
2) हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल
3) हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ. मोहन अवस्थी
4) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. रामकिशोर शर्मा

# रामायण में आदिवासी की भूमिका

डॉ. चंदन कुमारी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आदिवासी को अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। अपनी विशिष्ट संस्कृति और भाषा को सहेज कर रखनेवाले इस समुदाय को कथित उन्नत समाज में पिछड़ा माना जाता है जबकि वे आदि निवासी हैं। 'आदिवासी' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'मूल निवासी'। 'आदिवासी देश के मूल निवासी माने जाने वाले तमाम आदिम समुदायों का सामूहिक नाम है'...आदिवासी पद का 'आदि' उन समुदायों के आदिम युग तक के इतिहास का द्योतक है। '1' आदिवासी विशेषज्ञ जे.जे.राय बर्मन के अनुसार आदिवासियों में सभी जातियाँ मूल आदिवासी जाति की केटेगरी में नहीं आतीं...। '2 विख्यात आदिवासी चिंतक रमणिका गुप्ता ने अनार्यों के प्रति आर्यों का दृष्टिकोण बताते हुए रामायण का संदर्भ जोड़कर स्पष्ट किया है कि आर्यों ने आदिवासियों (अनार्यों)को मनुष्येतर श्रेणी में रखा है जो सर्वथा अनुचित है। द्रष्टव्य हैं उनके विचार – '...अनार्य उनकी दृष्टि में मनुष्यता का दर्जा पाने के हकदार ही नहीं थे। वे असुर थे, राक्षस थे, दानव थे, और सब विकृतियों, दुर्गुणों से लैस और बदसूरती के प्रतीक थे। पशुओं के सींग, पूंछ और लंबे-लंबे दांत उनपर मढ दिए गए थे। मनुष्य तो इन्हें आर्यों ने माना ही नहीं। जिसने राम का विरोध किया उसे राक्षस करार कर दिया गया और तो और जिन्होंने राम की सहायता कर उसका साम्राज्य कायम कराया, उन्हें भी बन्दर, भालू, गरुड़ कहा – मनुष्य नहीं। '3 मनुष्यता के क्रंदन और हनन की अनुगूँज तो भक्तिकालीन कवियों की कविताओं में भी मुखरित है।

रामायण में वर्णित विशिष्ट समुदायों के विशेष नाम (बन्दर, भालू, गरुड़, राक्षस, कोल, किरात, भील, वनवासी) रूप और गुण आधृत प्रतीत होते हैं। रामायण की संरचना में आदिवासी' अंतर्गुम्फित एवं समादृत हैं। रामचरितमानस में 'तुलसीदास' 'सुर अंसिक सब कपि और रीछा' 4 कह कर इन्हें संबोधित करते हैं। राम ने इन्हें स्वयं से कम कब आँका ? कम आँका होता तो भला भीलनी शबरी के जूठे बेर इतने प्रेम से वे क्यों खाते ? भला वे क्यों कहते निषादराज गुह से–

'तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता' सदा रहेहु पुर आवत जाता।'5 अंगद ने जब राम से कहा– 'नीचि टहल गृह कैसब करिहऊँ। पद पंकज बिलोकि भव तरिहऊँ ।।'6 तब राम ने उन्हें दास स्वीकार कर उनकी दीनता को प्रश्रय नहीं दिया बल्कि स्वतंत्र जीवन निर्वाहोन्मुख किया, पूर्णत: मनुष्योचित व्यवहार। निषादराज गुह जब दूर से ही गुरु वशिष्ठ को अपना परिचय देते हुए प्रणाम करते हैं तब परिचय जानकर गुरु वशिष्ठकितनी उत्कंठा और प्रेम से निषादराज से मिलते हैं, वह क्षण यहाँ द्रष्टव्य है –'प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि ते दंड प्रनामू।।

रामसखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा ।।

रामायण में आदिवासी के लिए प्रेम है, सम्मान है, अपनत्व है साथ ही जहाँ कुचाल, अत्याचार, अधर्म और अनीति का बोलबाला है वहाँ युद्ध का भी समशील विधान है। युद्ध में वीरगति या जय-पराजय तो दोनों पक्षों के युद्ध कौशल एवं रणनीति पर ही निर्भर होती है। लंका विजय से पूर्व राम ने अपने इष्टदेव महादेव की पूजा की। महादेव को आदिदेव (प्रथम देव) माना जाता है। डॉ. रामदयाल मुंडा के अनुसार' ...शिव एक आदिवासी देवता हैं। आदिवासी सभ्यता के ही अवशेषके रूप में सिंधु घाटी की खुदाई में उपलब्ध शिव जैसी मूर्ति पशुओं से घिरी मिलती है। ... उनकी वेशभूषा आदिवासियों की ही तरह है।'रावण भी शिवभक्त था।' छोटानागपुर के कुडडुख भाषा-भाषी उराँव आदिवासी अपने को रावण का वंशज कहते हैं। भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण से भी उराँव और रावण शब्दों का नजदीकी संबंध स्पष्ट है। '9 रावण के समुदाय की सदस्य त्रिजटा, सीता की शुभचिंतक थी। गिद्धराज जटायु ने तो पुत्री सीता की रक्षा हेतु अपने प्राणों का भी मोह नहीं रखा। 'प्राय: सभी मुंडा आदिवासी भाषाओँ में सीता का अर्थ हल चलाना ...है' मुंडारी भाषा में एक जदुर गीत भी गाया जाता है जिसकी प्रथम दो पंक्तियों का अर्थ है :

'हमने हल चलाते समय उसे पाया था'
हम इसे सीता नाम ही देंगे।
10

उपरोक्त लोकगीत में सीता सहित जनक को भी आदिवासी बताया जा रहा है।

आदिवासियों का प्रकृति से विशेष जुड़ाव होता है। वन, पर्वत, खोह, कंदरा, समुद्र और जड़ी-बूटियों से वे भलीभांति

परिचित होते हैं। उनमें कुछ विशेषज्ञ भी होते हैं, जैसे – वैद्यराज सुषेण, नल–नील (शिल्पी) इत्यादि। नल–नील जिन्होंने अपनी शिल्पकला द्वारा अपने दल की सहायता से रामसेतु का निर्माण किया। नल–नील की इस विद्या से राम अनभिज्ञ थे। तभी समुद्रराज से रास्ता देने के लिए उन्होंने तीन दिनों तकविनयपूर्वक प्रार्थना की। विनीत प्रार्थना की अवहेलना जान ही उन्होंने लोकशिक्षण और लोकहित हेतु धनुष उठाया और धनुष की एक टंकार हुई नहीं कि समुद्रराज हाथ जोड़े प्रकट हो गए समाधान देने। समाधान के रूप में नल–नील की शिल्प विद्या का रहस्य राम के समक्ष उजागर किया, जिससे लंका तक जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

रामायण में एक ओर राम के सहायकों (विभीषण और सुग्रीव) का राज्याभिषेक हुआ और दूसरे पक्ष का चिताभिषेक हुआ। सभी को एक ही लाठी से हाँकना कभी न्यायोचित नहीं होता है। यदि यही सही होता तो चित्रगुप्त को कर्मफल के बही–खाते से न जाने कब का छुटकारा मिल जाता ! मुनियों और सज्जनों को त्रास देनेवाले राक्षसों का वध यथायोग्यं तथा कुरु के तर्ज पर राम ने किया है। राम के इस कार्य में सहयोग देने हेतु स्वयं देवतागण आदिवासी के रूप में धरती पर आए जो शूरवीर होने के साथ–साथ धीर बुद्धिवाले भी हैं ।देखें–

'बनचर देह धरी छिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं।'

रामायण में आदिवासी अपनी भूमिका का निर्वाह रामजन्म के पूर्व से ही कर रहे थे। दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञ को पूर्ण करानेवाले 'शृंगी' ऋषि भी आदिवासी हैं।' शृंगी ऋषि एक आदिवासी थे, जो अपने लंबे जटाजूट बालों को सींग से बनी कंघी द्वारा बांधे रहते थे और जिसका उपयोग अब भी कई आदिवासी जातियों में होता है।'

रामायण में आदिवासियों का स्वरूप, उनका आचार–विचार, उनकी मंत्रणा शक्ति, उनकी संवेदनशीलता तब और उभरकर सामने आता है जब राम अयोध्या का वैभव तजकर पाँव पयादे ही भ्राता लक्ष्मण एवं भार्या सीता सहित वन की ओर प्रस्थान करते हैं। पहले तो निषादराज से भेंट, अशोक वृक्ष के तले भरपूर आतिथ्य–सत्कार फिर केवट द्वारा गंगा पार कराने से पूर्व राम–पद–प्रक्षालन और फिर केवट की जिद कि बस आपकी कुटिया तैयार करने तक साथ रहने दें। उधर देवता भी कोल–किरात के वेश में वन में आकर पर्णकुटी तैयार करने में जुटे हुए थे। राम के वनागमन का समाचार ज्योंहि कोल–किरातों को मिली वे प्रेमसहित कंद–मूल लेकर ऐसे दौड़ेमानों अपनत्व का उफनता सागर वनवासी राम की ओर उमगता चला आ रहा हो। उस सहज स्नेहसागर के हर बूंद को राम ऐसे सहेज रहे हैं जैसे पिता छोटे बालकों की बातों को समेटते हैं। द्रष्टव्य है –

'हम सब भांति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई।
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा।
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब। सर निरझर जलठाउँ देखाउब।
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता।
दो0 – बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन।'

यह राम का स्नेहभरित नया संसार है और विरहलीन अयोध्या में पशु भी विकल हैं। उधर निषादराज ने व्याकुल सुमंत्र और भरत को ढाढस बँधाया और इधर सभी निषाद राम विरह में विकल घोड़े की व्याकुलता से विकल हो रहे हैं, द्रष्टव्य है –

' नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि।
ब्याकुल भए निषाद सब रघुबर बाजि निहारि।'

अंत:करण में ऐसी संवेदनशीलता, शुद्धता और निर्मलता यहीं मिल सकती है। बनावटीपन से सर्वथा अनभिज्ञ पर स्वाभिमानी आदिवासी समाज, वन में भरत के संग आए अयोध्या समाज के सम्मुख अपनी जीवन शैली को बिना किसी दुराव–छिपाव के विनयशील भाषा में प्रकट करते हैं। द्रष्टव्य है –

'तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे।
देब काह हम तुम्हहि गोसाँई। ईंधनु पात किरात मिताई।
यह हमारि अति बडी सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई।
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती।
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं।
सपनेहुँ धरमबुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ।'

आदिवासी समाज अपने जीवन की विपन्नता में भी अपनी संस्कृति और परंपराओं का निर्वाह जिंदादिली से करते हैं। घोर विपत्ति की स्थिति में भी साहस और जुझारूपन से कार्य संपादित करना इनकी विशेषता है जिसके सर्वोपयुक्त उदाहरण हैं हनुमान जिन्होंने बारंबार असाध्य को साधते हुए सबको विपत्तियोंसे उबारा है। रामायण में आदिवासी गरिमामंडित हैं।

# ।। कविता ।।

हर सुबह जब फेसबुक खोलता,
दोस्तों और परिजनों का फेस देखता ,
घर के चौखट से बाहर पांव नहीं निकालता,
सारे देवी देवताओं,गुरुओं,बाबाओं का दर्शन हो जाता,
किसी के बंगले नहीं झांकता,
घर क्या कुछ हुआ सब दीख जाता ,
कौन किसका जन्म दिन मनाता,
कौन दुनिया से उठ जाता ,
किसका इस दुनिया में आना होता ,
फेसबुक सब बता जाता ,
फेसबुक कोई समाचार पत्र नहीं होता ,
नोटिस बोर्ड नहीं होता ,
पर हमें खबरें और सूचनाएं दे जाता ,
खेल जगत से परिचित करवाता,
दुनिया जहाँ की सैर मुफ्त करवाता,
अदभुत तस्वीरें दिखाता,
फेसबुक सबका फेस दिखाता,
उनसे मुफ्त की चैट भी करवाता,
लाईक करवाता, कामेन्टस भी लिखवाता,
और भी बहुत कुछ करवाता,
सोचता हूँ फेसबुक न होता,
तो ऐसा होता , वैसा होता ,
न जाने कैसा होता !
आपकी राय क्या है?
हाथ में कुदाल रखिए
साथ में मशाल रखिए
वाम है जलाल बन के
आप अब सवाल रखिए
दर्द में किसान बस यूं
हर जिगर कमाल रखिए
मुल्क का नया भगत बन
प्यार बेमिसाल रखिए
आज इंकलाब की खातिर
बस न बम बवाल रखिए
रहनुमा निहाल है अब
कर उसे हलाल रखिए
जुल्म के खिलाफ में भी
खून में उबाल रखिए
जंग जीतनी। नयी है
दूर हर हिलाल रखिए
एक यार राम रहमां
फूल औ गुलाल रखिए
प्यार वार की जगह बस
ज़िंदगी जमाल ....रखिए।

दीप मिल के जला दीजिए
हर अँधेरा मिटा दीजिए
ख़्वाब का है समुंदर मगर
अब हकीकत बना दीजिए
आज जलता जहां हर तरफ
यूँ न खुल के हवा दीजिए
दुश्मनी आज मकसद नहीं
दोस्त बन के दवा दीजिए
जान हैं आप सबकी अभी
फूल सा मुस्करा दीजिए
ज़िंदगी है ग़ज़ल फिर नयी
प्यार से गुनगुना दीजिए।

**- सिद्धेश्वर काश्यप**

## ।। कविता ।।

**श्रीमती भारती पिल्लै**
**प्राध्यापिका भौतिकी, केंद्रीय विद्यालय मॉस्को।**

कभी कभी अकेले में,
मैं और मेरा किरदार,
बहस में पड़ ही जाते हैं।
बहस कोई कोर्ट का मसला नहीं
बस दैनिक जीवन का संघर्ष और सच।
मैं भौतिक पदार्थों की तह में,
जांचने लगती हूँ खुद को,
जिसका वजूद है मगर होगा नहीं,
मुक्कमल नहीं ही होगा।
नश्वर है सब, बस चाक, बोर्ड और भौतिक संसार के
पैमाने को नापते नापते रह जायेंगी,
मेरी उंगलियाँ और आँखें,
सोचती हूँ क्या यही सच है,
जिसके बीच मैं कई वर्षों से,
घटा जोड़ के अवयवों में,
उलझकर दे रही हूँ नश्वर ज्ञान,
कुछ हो न हो एक तो सच है।
चाक, बोर्ड और प्रयोगशाला,
जिसके अंदरूनी रूप में
उभरते हैं बस साधन, साध्य और संसार,
जिसमें इंसानियत को निकाल पाने में,
सफल हो सकी।

**रीया शर्मा**
**केंद्रीय विद्यालय मॉस्को ।**

## ।। छोटी हूँ पर बहुत बड़ी हूँ।।

सुनो सुनो मैं छोटी हूँ पर देखो तुमसे बहुत बड़ी हूँ।
मूसलाधार बारिश हो जैसे खुम्बी जैसी अड़ी खड़ी हूँ।
छोटी लता सही लेकिन मैं तूफानों में खड़ी रही हूँ।
सुनो सुनो मैं छोटी हूँ पर देखो, तुमसे बहुत बड़ी हूँ।

मैं नारी जाति का सबसे छोटा रूप लिए आई हूँ,
मत छोटा आंको बच्ची को आशादीप लिए खड़ी हूँ।
उन लोगों से जाकर पूछो उनको जन्म दिया मैंने है,
आज उन्ही की मनमानी पर मैं तलवार लिए आई हूँ।
सुनो सुनो मैं छोटी हूँ पर देखो, तुमसे बहुत बड़ी हूँ।

माँ ने अपनी ममता देकर ममता का उपहार दिया है,
सच मैंने ही इस जग को फूलों का सरताज दिया है,
जिसने मेरे इस उपवन को जहरीला संताप दिया है।
उन लोगों की महाभूल को मैं इतिहास लिए आई हूँ,
दबी नहीं, मैं उठी हुई हूँ, देखो कितनी बढ़ी हुई हूँ।
सुनो सुनो मैं छोटी हूँ पर देखो, तुमसे बहुत बड़ी हूँ।

МАГНУМ
Для истинных гурманов!
1kg NET
DUNAR
LEGACY
Traditional Basmati Rice
1kg NET
DUNAR
ELONGA
Extra Long Sella Basmati Rice
Aged Rice
Banno
EXTRA LONG
TRADITIONAL BASMATI RICE
PRODUCT OF INDIA
Danima
Butter Cookies
Danima
Butter Cookies
Original Danish Recipe
Danima
Butter Cookies
Maharaja Tea
Чай Махараджа
Darjeeling
Tiesta
200g

# रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' मॉस्को, रूस
# रूसी-भारतीय संघ द्वारा सम्मानित होने वाले हिंदी सेवियों का परिचय

डॉ. रामेश्वर सिंह, अध्यक्ष, रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा'

26.09.2018

## अलेक्जांद्र कदाकिन 'हिंदी मित्र सम्मान-2018'

### ग्युज़ेल स्त्रेलकोवा ( हिंदी प्राध्यापक )

**श्रीमती ग्युज़ेल स्त्रेलकोवा एशिया और अफ्रीकी देश अध्ययन संस्थान**
**मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय में भरतीय साहित्य और हिंदी भाषा पढाती हैं।**

इनका जन्म 2 जनवरी 1955 को रुस में हुआ। सन 1980 में एशियन अफ्रीकन स्टडिज स्टेट युनिवर्सिटी से प्रथम श्रेणी से एम ए किया। सन 1985-86 से मराठी भारतीय भाषा विभाग आर्ट विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय से डिग्री पास किया। आदि ग्रंथ में संत नामदेवके योगदान को लेकर किए गए शोध से पीचडी की उपाधि एशियन अफ्रीकन स्टडिज स्टेट युनिवर्सिटी मॉस्को से ली। समाजविज्ञान के विषय में भी सन 1991 में मॉस्को युनिवर्सिटी से प्रमाण पत्र प्राप्त किया। सन 1980 से 1989 तक मॉस्को रेडियों पर भी काम किया। सन 1989 से 1991 तक मीर पब्लिकेशन में भी काम किया। इसके अतिरिक्त रामायण, प्रेमचंद व अन्य कवि कवियों लेखकों का अनुवाद व अन्य कार्य किया। 70 से अधिक सम्मेलनों में लगभग 70 लेख प्रकाशित हुए। रूस में हिंदी की स्थिति पर भी कई लेख प्रकाशित हुए।

## पदम् श्री मदन लाल मधु 'हिंदी सेवा सम्मान-2018'

### सुश्री एकतेरीना कोस्तिना, सेंट-पीटर्सबर्ग राजकीय विश्वविद्यालय

भारतीय भाषाओं के विभाग में हिंदी की प्राध्यापिका का काम करती है। सन् 2004 में उसने सेंट-पीटर्सबर्ग राजकीय विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एमए (भाषाविज्ञान) की डिग्री ली। 2002 से वह हिंदी, बंगला व संस्कृत पढ़ाती है। सन् 2000-2001 में उसने केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा) से हिंदी उच्च दक्षता डिप्लोमा भी प्राप्त किया था। संस्थान में पढ़ते समय उसने छात्र-पत्रिका में एक रूसी गीत का हिंदी में अनुवाद प्रकाशित करवाया था।

एकतेरीना कोस्तिना ने 15 से अधिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है तथा हिंदी व्याकरण, हिंदी शिक्षण और अनुवाद को लेकर अपने शोध प्रस्तुत किये हैं। विभिन्न वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित उसके लेख हिंदी सर्वनाम प्रणाली, असमापिका क्रिया के रूप, हिंदी पारिवारिक शब्दावली आदि को समर्पित हैं। 2017 में उसने रूसी और भारतीय संस्कृति की समानताओं को खोजकर रूसी विद्यार्थियों और प्राध्यापकों द्वारा हिंदी में लिखित पुस्तक 'वोल्गा के तल से गंगा के जल तक' के संपादन में भाग लिया था।

भारत जाने वाले यात्रियों की सहायता के लिए उसने एक रूसी-हिंदी वाक्यांश पुस्तक तैयार की जिसके 2005 से लेकर 2018 तक कम से कम 8 संस्करण हुए हैं। 2016 में सेंट-पीटर्सबर्ग राजकीय विश्वविद्यालय, भारतीय भाषाओं के विभाग के कई शिक्षकों ने मिलकर प्राथमिक हिंदी को र्स नामक पाठ्यपुस्तक प्रकाशित करवायी। इस पाठ्यपुस्तक का मुख्य संपादक भी एकतेरीना कोस्तिना थी। 2018 में एकतेरीना कोस्तिना की एक और पुस्तक 'सैद्धांतिक हिंदी व्याकरण' प्रकाशित हुई।

सन् 2008 से लेकर सेंट-पीटर्सबर्ग में रहने वाले हिंदी स्कूल के बच्चों के लिए एक हिंदी प्रतियोगिता आयोजित होती है। इस प्रतियोगिता के लिए प्रतिवर्ष नए-नए कार्य तैयार करती हुई एकतेरीना कोस्तिना हिंदी में बच्चों की रूचि बढ़ाने का प्रयास भी करती है।

## पदम् श्री मदन लाल मधु 'हिंदी सेवा सम्मान-2018'

### सागर सूद ( संपादक एवं प्रकाशक )

साहित्य कलश पब्लिकेशन एवं हिन्दी त्रै-मासिक पत्रिका साहित्य कलश के संपादक एवं संस्थापक हैं। साहित्य कलश पत्रिका पंजाब की एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसे नेत्रहीन दोस्त पढ़ और सुन सकते हैं। साहित्य कलश पत्रिका के अब तक 17 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय कवि संगम पंजाब के प्रधान हैं। जिनकी अब तक हिन्दी एवं पंजाबी भाषाओं में 80 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें से कई पुस्तकों के संस्करण आ चुके हैं। ग़ज़ल, गीत, कविताएं, लघुकथा, आलेख, पटकथा सभी विधाओं पर इनकी बराबर पकड़ है। बहुत से मशहूर ग़जल एवं गीत गायकों ने इनकी रचनाओं को गाया है। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी में भी इनकी रचनाओं का लगातार प्रकाशन होता रहता है। इन्होंने कई फिल्मों का निर्माण किया और कई फिल्मों में अभिनय भी किया है।